

1947 का लंदन-विलाख सैनिक ट्रेन बम विस्फोट: ज़ायोनी उग्रवाद, ब्रिटिश पीछे हटना, और एक भूला हुआ युद्ध कृत्य

1947 की गर्मियों में, जब यूरोप द्वितीय विश्व युद्ध के मलबे से पुनर्निर्माण के लिए संघर्ष कर रहा था, ब्रिटिश सैन्य ढांचे के हृदय में एक कम-ज्ञात लेकिन महत्वपूर्ण राजनीतिक हिंसा का कार्य हुआ। **13 अगस्त** की रात को, **175 कर्मियों को ले जा रही एक ब्रिटिश सैनिक ट्रेन**—जिसमें महिलाएँ भी शामिल थीं—**ऑस्ट्रियाई आल्प्स में तोड़फोड़** की गई, **माल्निज़** के पास **ताउर्न सुरंग** से ज्यादा दूर नहीं, जहाँ एक विस्फोटक उपकरण ने ट्रेन के एक हिस्से को फाड़ दिया और आपदा को मुश्किल से टाला गया।

यह कोई साधारण ट्रेन नहीं थी। यह **लंदन से विलाख**, ऑस्ट्रिया तक ब्रिटिश कब्ज़ा सैनिकों को ले जाने वाली **समर्पित सैन्य परिवहन सेवा** का हिस्सा थी, जो हार्विच, हुक ऑफ़ हॉलैंड, और युद्धोत्तर जर्मनी से होकर गुज़रती थी। विस्फोट सोचा-समझा था, जो स्पष्ट रूप से बड़े पैमाने पर हताहत करने के उद्देश्य से रेलपथ के एक कमज़ोर हिस्से को निशाना बनाता था। ब्रिटिश सेना और ऑस्ट्रियाई अधिकारियों ने तुरंत **ज़ायोनी उग्रवादियों** पर संदेह किया, संभवतः **लेही समूह (जिसे स्टर्न गैंग भी कहा जाता है)** से जुड़े—एक कट्टरपंथी अर्धसैनिक संगठन जो ब्रिटिश हितों पर यूरोप और मध्य पूर्व में हमलों के लिए जाना जाता था, ताकि ब्रिटेन को फ़लस्तीन से पीछे हटने पर मजबूर किया जा सके।

हालाँकि हमले में कोई मौत नहीं हुई, यह **रणनीतिक, प्रतीकात्मक रूप से लदा हुआ, और गहराई से परेशान करने वाला** था। इसने दिखाया कि फ़लस्तीन पर संघर्ष यूरोपीय रंगमंच में कैसे फैल रहा था—सहयोगी-कब्ज़े वाले ऑस्ट्रिया में, कम से कम—और ब्रिटेन की कमज़ोरी को उजागर किया जब उसकी साम्राज्यवादी पकड़ पहले से ही कमज़ोर हो रही थी।

लंदन-विलाख सैनिक ट्रेन: ब्रिटेन का युद्धोत्तर सैन्य रेल नेटवर्क

द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद, ब्रिटेन ने **जर्मनी और ऑस्ट्रिया** में बड़े कब्ज़ा क्षेत्रों का प्रशासन संभाला, जो मध्य यूरोप को स्थिर करने के सहयोगी प्रयास का हिस्सा था। **दक्षिणी ऑस्ट्रिया** में, ब्रिटिश टूप्स ऑस्ट्रिया (BTA) को **कारिन्थिया** में व्यवस्था बनाए रखने का काम सौंपा गया, जो यूगोस्लाविया और इटली की सीमा से लगी क्षेत्र थी। विलाख, एक प्रमुख रेल जंक्शन, ब्रिटिश कब्ज़ा क्षेत्र का लॉजिस्टिक केंद्र बन गया।

इस ऑपरेशन का समर्थन करने के लिए, **युद्ध कार्यालय** ने यूनाइटेड किंगडम को ऑस्ट्रिया से जोड़ने वाली एक समर्पित **सैनिक ट्रेन सेवा** आयोजित की। ब्रिटिश साम्राज्य के पतन के इतिहास में अक्सर अनदेखी की जाती है, लेकिन यह मार्ग ब्रिटेन की यूरोपीय सैन्य उपस्थिति में एक आवश्यक धमनी थी।

मार्ग

यात्रा में समुद्री और रेल खंडों का संयोजन था, जो दक्षता और सुरक्षा के लिए सावधानीपूर्वक समन्वित थे:

- **लंदन से हार्विच**: सैनिक **लिवरपूल स्ट्रीट स्टेशन** से चढ़ते थे, पूर्व की ओर **पार्कस्टन क्वे** की ओर।
- **हार्विच से हुक ऑफ़ हॉलैंड**: **एम्पायर पार्कस्टोन** जैसे सैनिक फ़ेरी पर, रात भर की यात्रा उन्हें सुबह नीदरलैंड्स पहुँचाती थी।
- **महाद्वीपीय रेल से ऑस्ट्रिया**: हुक ऑफ़ हॉलैंड से, सैनिक **ब्रिटिश ज़ोन जर्मनी** से गुज़रते थे—कोलोन, म्यूनिख, और साल्ज़बर्ग से—ऑस्ट्रिया में प्रवेश करने से पहले।
- **विलाख में आगमन**: **क्लागेनफ़र्ट** या **साल्ज़बर्ग** से, ट्रेनें आल्प्स के दक्षिण से **विलाख एचबीएफ़** तक जाती थीं, जो गैरिसन और पास के कैंप जैसे **एल अलामेन ट्रांज़िट कैंप** के लिए प्रमुख वितरण बिंदु था।

पूरी यात्रा लगभग **1,000 मील** की थी, जो **2-3 दिन** लगती थी। 1947 भर में, ये ट्रेनें **रोज़ाना** चलती थीं, चोटी रोटेशन और डेमोबिलाइज़ेशन अवधियों में हज़ारों सैनिकों को ले जाती थीं।

सुरक्षा और रणनीतिक मूल्य

इसकी सैन्य भूमिका के कारण, मार्ग ब्रिटिश नियंत्रण में था, अक्सर संरक्षित, और सुरक्षित माना जाता था। फिर भी, इसकी विशाल लंबाई, जिसमें दूरस्थ आल्पाइन खंड शामिल थे, कमज़ोरियाँ पेश करती थीं—खासकर **ऑस्ट्रिया** में, जहाँ विस्थापित व्यक्ति (DPs), राजनीतिक उत्तेजना, और काला बाज़ार नेटवर्क एक अस्थिर मिश्रण बनाते थे। खुफ़िया रिपोर्टों ने **ऑस्ट्रिया में ज़ायोनी शरणार्थियों**, विशेष रूप से **बाड गास्टाइन** के पास, को ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ संगठित प्रतिरोध के स्रोत के रूप में चिह्नित किया—खासकर फ़्लस्तीन में यहूदी आव्रजन के संबंध में।

13 अगस्त 1947: आल्प्स में तोड़फोड़

लगभग रात **10:30 बजे 13 अगस्त** की रात को, सैनिक ट्रेन **माल्मिज़ से तीन मील दक्षिण** एक संकीर्ण, पहाड़ी रेल खंड से गुज़र रही थी, **ताउर्न सुरंग** के पास, जब यह रेलबेड के नीचे दबी एक बम से टकराई।

हमला

दो विस्फोटक उपकरण लगाए गए थे:

- **पहला बम सामान की गाड़ी के नीचे फटा**, उसे गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया और पीछे की कई कोचों को पटरी से उतार दिया।
- **दूसरा बम नहीं फटा**, संभवतः दोषपूर्ण फ़्यूज़ के कारण। अगर फटता, तो ट्रेन एक खड़ी ढलान में गिर सकती थी, बड़े पैमाने पर हताहत हो सकते थे।

चमत्कारिक रूप से, **कोई मारा नहीं गया**। सामान की गाड़ी नष्ट हो गई, कई कंपार्टमेंट संरचनात्मक क्षति हुई, लेकिन ट्रेन बड़े हिस्से में सीधी रही, एक ढलान पर रुक गई। **तेज़ रुकावट और खुरदरी आल्पाइन स्थलाकृति** ने विडंबनापूर्वक ट्रेन को पूर्ण डिरेलमेंट से बचाया।

एक **अनुवर्ती विस्फोट** घंटों बाद **विलाख के पास वेल्डेन में ब्रिटिश 138वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड मुख्यालय** के बाहर हुआ। हालाँकि इस बम ने न्यूनतम संरचनात्मक क्षति और कोई चोट नहीं पहुँचाई, इसका समय एक समन्वित हमले का संकेत देता था।

जाँच

प्रारंभिक जाँचें अनिर्णीत रहीं। एक संदिग्ध—**एक अज्ञात व्यक्ति जिसे ऑस्ट्रियाई पुलिस ने गोली मारी और घायल किया**—विस्फोट स्थल के पास पकड़ा गया। वह हाल ही में **बाड गास्टाइन** से निकला था, एक शहर जो **यहूदी विस्थापितों** को रखने के लिए जाना जाता था, जिनमें से कुछ ने फ़्लस्तीन में ब्रिटिश आव्रजन नियंत्रणों के प्रति शत्रुता व्यक्त की थी।

अधिकारियों ने **3-5 ऑपरेटिवों की छोटी टीम** पर संदेह किया, संभवतः लेही जैसे ज़ायोनी उग्रवादी समूहों से जुड़ी। कोई समूह ज़िम्मेदारी नहीं लेता, और कोई आरोप नहीं लगे। फिर भी, **द न्यू यॉर्क टाइम्स** और **द सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड** में समकालीन रिपोर्टों ने प्रो-ज़ायोनी DPs की निकटता और हमले के राजनीतिक प्रतीकवाद पर ध्यान दिया। ब्रिटिश और ऑस्ट्रियाई अधिकारी **ज़ायोनी उग्रवाद** को संभावित मकसद मानते थे।

1947 ब्रिटिश सैनिक ट्रेन बम विस्फोट का आरोपण और विरासत

जबकि **13 अगस्त 1947** ट्रेन बम विस्फोट के समकालीन विवरण—जैसे **द न्यू यॉर्क टाइम्स**, **द सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड**, और ब्रिटिश सेना के कम्युनिके में रिपोर्ट—अपराधियों को केवल **अज्ञात “आतंकवादी”** के रूप में वर्णित करते थे, बाद की विद्वता ने हमले को **लेही**, जिसे **स्टर्न गैंग** भी कहा जाता है, के लिए अधिक विश्वास के साथ जिम्मेदार ठहराया है। यह

कट्टरपंथी ज़ायोनी अर्धसैनिक संगठन पहले से ही फ़लस्तीन जनादेश के अंतिम वर्षों में ब्रिटिश राजनीतिक और सैन्य ढांचे पर **ट्रांसनेशनल तोड़फोड़ अभियान** के लिए कुख्यात था।

माल्निज़ के पास बम विस्फोट की विधि, समय, और रणनीतिक मूल्य 1946-1948 के दौरान यूरोप और मध्य पूर्व में लेही की गतिविधियों से निकटता से मेल खाते हैं। लेही की उच्च-प्रोफ़ाइल ऑपरेशनों—जैसे **किंग डेविड होटल बम विस्फोट (1946)** या **काहिरा-हाइफ़ा ट्रेन हमले**—की तुलना में कम सार्वजनिक रूप से मान्यता प्राप्त होने के बावजूद, माल्निज़ घटना समूह के पैटर्न में सहजता से फिट बैठती है: **उग्र दबाव जो ब्रिटेन के फ़लस्तीन से पीछे हटने को तेज़ करने और यहूदी आब्रजन नीति पर रियायतें देने के लिए डिज़ाइन किया गया था।**

लेही की भूमिका और ऑपरेशनल दर्शन

अब्राहम स्टर्न द्वारा स्थापित और बाद में **यिज़्हाक शमीर** (इज़राइल के भावी प्रधानमंत्री) जैसे व्यक्तियों द्वारा नेतृत्वित, **लेही** ने ब्रिटेन-विरोधी रणनीति का पीछा किया बिना समझौता। समूह ने ब्रिटिश को औपनिवेशिक कब्ज़ाकर्ता के रूप में देखा और अपनी तोड़फोड़ अभियानों—ट्रेनों, पुलिस चौकियों, और राजनयिक स्थलों पर हमलों सहित—को **विरोधी-साम्राज्यवादी प्रतिरोध** के कार्यों के रूप में चित्रित किया।

अधिक उदारवादी **हगनाह**, या यहाँ तक कि राष्ट्रवादी **इर्गुन** के विपरीत, लेही का मानना था कि **ब्रिटिश हितों को जहाँ कहीं भी मौजूद हों, निशाना बनाना**—केवल फ़लस्तीन के भीतर नहीं। इसके भूमिगत सेल **इटली, फ्रांस, जर्मनी, और यूके** में काम करते थे, अक्सर **यहूदी शरणार्थी समुदायों** में सहानुभूतिपूर्ण तत्वों के साथ सहयोग करते थे, जिनमें से कई ब्रिटेन के **1939 श्वेत पत्र** के कार्यान्वयन से कटु थे, जिसने होलोकॉस्ट के बाद भी फ़लस्तीन में यहूदी आब्रजन को तेज़ी से सीमित कर दिया था।

अपने वैचारिक उत्साह के बावजूद, लेही भी **व्यावहारिक** था। वे हमेशा विदेशी भूमि पर किए गए हमलों की ज़िम्मेदारी नहीं लेते थे—खासकर जब ऐसे कार्य **विस्थापित व्यक्ति नेटवर्क, हथियार तस्करी, या राजनयिक उद्देश्यों** को खतरे में डाल सकते थे। यह **माल्निज़ हमले के लिए आधिकारिक दावे की कमी** को समझा सकता है, इसके लेही के लक्ष्यों और विधियों के स्पष्ट संरेखण के बावजूद।

लेही का **युद्धोत्तर आधिकारिक अभिलेखागार—फ्रीडम फ़ाइटर्स ऑफ़ इज़राइल हेरिटेज एसोसिएशन—13 अगस्त** बम विस्फोट को विशेष रूप से सूचीबद्ध नहीं करता। फिर भी, यह समूह की “अंतर्राष्ट्रीय अभियान” का जश्न मनाता है और **ऑस्ट्रिया, इटली, और जर्मनी** में तोड़फोड़ ऑपरेशनों का उल्लेख करता है, जहाँ “ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने यहूदी भूमिगत की पहुँच महसूस की।” कई **द्वितीयक स्रोत** माल्निज़ बम विस्फोट को लेही की संभावित, यदि निश्चित रूप से पुष्टि नहीं, ऑपरेशन के रूप में उद्धृत करते हैं—इसे “**ज़ायोनी उग्रवाद का एक मार्मिक उदाहरण**” के रूप में वर्णित करते हुए जो फ़लस्तीन की सीमाओं से बहुत आगे फैला हुआ था।**

गिरफ़्तारियों या दोषसिद्धियों की अनुपस्थिति

गहन जाँच के बावजूद, **सैनिक ट्रेन बम विस्फोट से संबंधित किसी को दोषी नहीं ठहराया गया**। हमले के बाद के दिनों में, **ऑस्ट्रियाई पुलिस ने एक व्यक्ति को स्थल के पास गोली मारी और पकड़ा**, कथित तौर पर **एक पोलिश यहूदी शरणार्थी** जो हाल ही में **बाड गास्टाइन** से निकला था, एक ज्ञात प्रो-ज़ायोनी उत्तेजना केंद्र। फिर भी, उसे **आरोप के बिना रिहा** कर दिया गया, और **कोई और संदिग्ध हिरासत में नहीं लिया गया**। ब्रिटिश और ऑस्ट्रियाई अधिकारियों ने कारिन्थिया में **विस्थापित व्यक्ति शिविरों** की संक्षिप्त छापेमारी की, ज़ायोनी संबद्धताओं वाले व्यक्तियों से पूछताछ की—लेकिन इन प्रयासों से कोई कार्रवाई योग्य खुफ़िया जानकारी नहीं मिली।

यह **चालाकी लेही की यूरोपीय ऑपरेशनों की विशेषता थी**। समूह अक्सर **इटली से प्रशिक्षित तोड़फोड़कर्ताओं, शरणार्थी शिविरों से स्थानीय सहानुभूतियों, और झूठी पहचान और अस्थायी आवास नेटवर्क** का उपयोग करके पता लगाने से बचता था। ब्रिटिश खुफ़िया फ़ाइलें और युद्ध कार्यालय दस्तावेज़ (उदाहरण के लिए, **WO 32/15258**) कब्ज़ा क्षेत्रों में “परिष्कृत तोड़फोड़ कार्यों” के पैटर्न को नोट करते हैं, अक्सर “ज़ायोनी कट्टरपंथियों को जिम्मेदार ठहराया जाता है, लेकिन वर्तमान क्षेत्र स्थितियों में पुष्टि करना असंभव”।

जबकि लेही की **फ़लस्तीन में घरेलू ऑपरेशन** अधिक दृश्य गिरफ़्तारियों और फाँसियों में परिणत हुई—जैसे **1947 में मोशे बाराज़ानी की गिरफ़्तारी और आत्महत्या**, या पुलिस घात में पकड़े गए सदस्यों की फाँसी—इसकी **यूरोपीय तोड़फोड़ सेल** घुसपैठ या बाधित करना बहुत कठिन साबित हुई।

उल्लेखनीय संबंधित घटनाएँ शामिल हैं:

- **मई 1947 (पेरिस):** लेही के पाँच सदस्यों को **लंदन कोलोनियल ऑफ़िस बम विस्फोट** में प्रयुक्त समान विस्फोटकों के साथ गिरफ़्तार किया गया। कोई ऑस्ट्रियाई कनेक्शन नहीं।
- **सितंबर 1947 (बेल्जियम):** दो ऑपरेटिव, **गिल्बर्ट “एलिज़ाबेथ” नाउथ** और **जैकब लेव्स्टीन**, ब्रिटिश राजनयिक लक्ष्यों के लिए विस्फोटक तस्करी के लिए दोषी ठहराए गए। लेव्स्टीन के फ़लस्तीन में पूर्व हिंसा के लिंक थे लेकिन माल्निज़ से जुड़े नहीं।
- **1946-1947 (इटली):** संयुक्त **लेही-इर्गुन सेल** ने ब्रिटिश दूतावासों और हथियार डिपो पर हमले किए, अक्सर **रोम, ट्रिएस्टे**, और **सालज़बर्ग** के बीच घूमते हुए, जाली कागज़ात और शरणार्थी चैनलों का उपयोग करते हुए।

हर मामले में, **ऑपरेशनल फुटप्रिंट माल्निज़ प्रोफ़ाइल** से मेल खाता था: छोटी टीमों, रणनीतिक लक्ष्य, जिम्मेदारी का कोई दावा नहीं, कोई स्थायी गिरफ़्तारियाँ नहीं।

विरासत: सामरिक सफलता, ऐतिहासिक फुटनोट

लेही नेतृत्व के मन में, **माल्निज़ बम विस्फोट**—बड़े पैमाने पर हताहतों के बिना भी—संभवतः एक **सामरिक सफलता** का प्रतिनिधित्व करता था: इसने **ब्रिटिश बलों को झकझोर दिया**, एक प्रमुख सैनिक लाइन को बाधित किया, और **ज़ायोनी प्रतिरोध की पहुँच** का प्रतीक बनाया। लेही के आधिकारिक रिकॉर्ड में इसकी **अनुपस्थिति** जानबूझकर हो सकती थी: **ट्रांसनेशनल लॉजिस्टिक्स की रक्षा** करने और व्यापक यूरोपीय ऑपरेशनों को समझौता करने से बचने की विधि।

ब्रिटिश दृष्टिकोण से, हमला **शर्मनाक और चिंताजनक** दोनों था। इसने ऑस्ट्रिया में **सहयोगी नियंत्रण की सीमाएँ** दर्शाई और **औपनिवेशिक संघर्षों का यूरोप में फैलाव** उजागर किया, जहाँ विस्थापित आबादी, अनसुलझे शिकायतें, और खुली सीमाएँ विद्रोही गतिविधि के लिए उपजाऊ भूमि बनाती थीं। फिर भी, पुष्ट अपराधियों के बिना, घटना अंततः **सार्वजनिक स्मृति से फीकी पड़ गई**, 1948 में इज़राइल की स्थापना और प्रारंभिक शीत युद्ध के भू-राजनीतिक उथल-पुथल से ढक गई।

फिर भी, 1947 का लंदन-विलाख सैनिक ट्रेन बम विस्फोट **ट्रांसकॉन्टिनेंटल एंटी-कॉलोनियल हिंसा का एक दुर्लभ उदाहरण** के रूप में खड़ा है, जो **शरणार्थी संकट, उग्र ज़ायोनिज़्म, और साम्राज्यवादी पीछे हटना** को एक लगभग भूले हुए विस्फोटक स्पष्टता के क्षण में जोड़ता है।

आधुनिक मानकों से आतंकवाद

ब्रिटिश सैन्य विश्लेषकों द्वारा अनुमानित उद्देश्य था:

- **बड़े पैमाने पर हताहत पहुँचाना।**
- ब्रिटिश बलों को **आतंकित** करना।
- फ़लस्तीन में आव्रजन प्रतिबंधों को ढीला करने के लिए **सरकार पर दबाव** डालना।

हमला एक व्यापक पैटर्न का हिस्सा था: उस वर्ष पहले, ज़ायोनी उग्रवादियों ने **लंदन सोशल क्लब** पर बमबारी की, **कोलोनियल ऑफ़िस** में एक असफल उपकरण लगाया, और फ़लस्तीन में ट्रेनों पर बमबारी की। संदेश स्पष्ट था: **ब्रिटिश लक्ष्य अब सुरक्षित नहीं थे, यूरोप में भी नहीं।**

हालाँकि इसके अपराधियों द्वारा इसे औपनिवेशिक कब्ज़े के खिलाफ प्रतिरोध के कार्य के रूप में चित्रित किया गया, **1947 में माल्निज़ के पास ब्रिटिश सैनिक ट्रेन बम विस्फोट** आज के कानूनी और नैतिक मानकों से **अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद** के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा।

समकालीन परिभाषाएँ

व्यापक रूप से स्वीकृत कानूनी ढांचों के अनुसार—जैसे **संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, और अमेरिकी संघीय कानून** द्वारा उपयोग किए गए—आतंकवाद को परिभाषित किया जाता है:

“व्यक्तियों या संपत्ति के खिलाफ हिंसा का गैरकानूनी उपयोग या धमकी, राजनीतिक या वैचारिक उद्देश्यों के लिए एक सरकार या नागरिक आबादी को डराने या बाध्य करने के लिए।”

यह परिभाषा मालिनज़ हमले में मौजूद **मुख्य तत्वों** को कैप्चर करती है:

- **राज्य कर्मियों का लक्ष्यीकरण** (आधिकारिक कर्तव्य पर ब्रिटिश सैनिक)।
- अंधाधुंध बमबारी से **बड़े पैमाने पर हताहत** करने का इरादा।
- **राजनीतिक उद्देश्य**: ब्रिटेन पर फ़लस्तीन पर नियंत्रण छोड़ने और यूरोपीय यहूदियों पर आब्रजन प्रतिबंध हटाने का दबाव।
- **ट्रांसनेशनल निष्पादन**: फ़लस्तीन-आधारित राजनीतिक आंदोलन से संबद्ध अभिनेताओं द्वारा ऑस्ट्रिया में किया गया हमला, तीसरे राष्ट्र (यूके) की विदेश नीति को प्रभावित करता है।

यदि आज ऐसा ऑपरेशन होता—**एक गैर-राज्य समूह यूरोप में NATO सैनिक ट्रेन पर विस्फोटक लगाता**—तो यह संभवतः **आतंकवाद-विरोधी नामांकन, अंतर्राष्ट्रीय गिरफ्तारी वारंट, और संभवतः प्रायोजक संगठन के खिलाफ प्रतिबंध या सैन्य प्रतिक्रिया** ट्रिगर करता।

लेही और “आतंकवादी” लेबल का विकास

ध्यान देने योग्य है कि **लेही को 1940 के दशक में ब्रिटिश सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर आतंकवादी समूह** नामित किया गया था, **इर्गुन और हगनाह (विशिष्ट ऑपरेशनों में)** के साथ। ब्रिटिश अधिकारियों ने उनकी अभियान को **“आतंकवादी विद्रोह”** कहा, विशेष रूप से उच्च-प्रोफ़ाइल घटनाओं के बाद जैसे:

- **किंग डेविड होटल बम विस्फोट (1946)**।
- **लॉर्ड मोयने की हत्या (1944)**।
- **फ़लस्तीन में ब्रिटिश सार्जेंट्स की फाँसी (1947)**।

संदर्भ

1. “Bomb Derails British Troop Train in Austria; No Casualties.” **The New York Times**, 14 अगस्त 1947।
2. “British Train Blown Up in Austria.” **The Sydney Morning Herald**, 15 अगस्त 1947।
3. United Kingdom War Office. **British Troops Austria (BTA) Quarterly Historical Report, Q3 1947**. WO 305/73. The National Archives, Kew, UK।
4. Austrian Ministry of the Interior. **Internal Security Report to Allied Commission for Austria**, अगस्त 1947। द्वितीयक स्रोतों में उद्धृत।
5. Bell, J. Bowyer. **Terror Out of Zion: The Fight for Israeli Independence**. New Brunswick, NJ: Transaction Publishers, 1977।
6. Heller, Joseph. **The Stern Gang: Ideology, Politics and Terror, 1940–1949**. लंदन: Frank Cass, 1995।
7. Zertal, Idith. **From Catastrophe to Power: Holocaust Survivors and the Emergence of Israel**. Berkeley: University of California Press, 1998।
8. Freedom Fighters of Israel (Lehi) Heritage Association. **Internal Bulletins and Archival Materials, 1946–1948**. तेल अवीव, इज़राइल।
9. “Two Jews Jailed in Belgium for Smuggling Explosives.” **The Palestine Post**, 12 सितंबर 1947।

10. Lehi Underground Radio Broadcast. "Lehi Claims Responsibility for Cairo-Haifa Train Bombing." 28 फ़रवरी 1948।
11. Röhl, Wolfgang. **Britische Militärzüge in Österreich 1945–1955**. वियना: Österreichischer Miliz Verlag, 2005।
12. British Army of the Rhine. **Rail Transport Records, 1946–1950**. Ref: BAOR/LOG/47. Imperial War Museum, लंदन।